भूलकर अपना तन मन बुद्धि से बाबा को याद करो
अपने भीतर सर्व शक्तियों की प्राप्ति का अनुभव करो
आत्म दीपक बुझ गया अज्ञान अँधेरे में
भटकते जा रहे
हर कदम पर विकारों की ठोकर से घायल होते जा रहे
चारों और फ़ैली अशांति सृष्टि मंच पर मचा है हाहाकार
मुक्त करो दुःख से हमें आत्माएं कब से कर रही पुकार
करो याद मुझको अपना आसुरी स्वभाव मिटाते जाओ
ईश्वरीय प्यार अपनाकर आत्मिक दृष्टि बढाते जाओ
बच्चों देखो खुद पर विकारों की कितनी मैल चढ़ा बैठे
८४ जन्मों की सीढ़ी उतरकर पापों का बोझ

चढ़ा बैठे
बाबा कहते अपवित्रता है तुम्हारे सर्व दुखों का कारण
मेरी अटूट याद से पावन बनकर इसका करो निवारण
तुम्हारी कड़ी परीक्षा लेने माया के तूफ़ान आते रहेंगे
आज्ञाकारी बच्चों को बाबा माया रावण से बचाते रहेंगे
समय बड़ा अनमोल है इसे आलस में ना कभी गंवाना
ईश्वरीय पढाई पढ़कर अपनी चलन को श्रेष्ठ बनाना
देहभान त्यागकर खुद को निराकारी रूप में बदलना
सम्पूर्ण शांति पाने का लिए शांतिधाम की और चलना
ॐ शांति